पाठ 15. हीरा और कोयला

पाठ की भूमिका

यह एक एकांकी है जिसके दो पात्र हैं- हीरा और कोयला। रूप-गुण से भिन्न ये दोनों अपनी-अपनी उपयोगिता साबित करते हैं जबकि हर चीज़ की अपनी विशेषता और उपयोगिता होती है। जैसे–जहाँ काम आवे सुई, का करे तलवार। इस प्रकार का भाव इस पाठ में परिलक्षित होता है। इस पाठ के माध्यम से बच्चों में उत्तेजित व उद्‌वेलित करने वाले कारकों से सकारात्मक रूप से निपटने की क्षमता का विकास होगा।

पाठ का सार

हीरा और कोयला अपनी-अपनी उपयोगिता साबित करना चाह रहे हैं। हीरा घमंड से चूर है जबकि कोयले में जीवन की वास्तविकता की समझ है। हीरा चंद लोगों की तिज़ोरियों की शोभा बढ़ाता है जबकि कोयला आम आदमी की ज़रूरतों को भी पूरा करता है। कोयला हीरे को समझाना चाह रहा है कि दोनों एक ही धरती से निकलने वाले पत्थर हैं। पाठ के अंत में आपस में मिल-जुलकर रहने की सीख दी गई है।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  यह विज्ञान से संबंधित वार्तालाप की शैली में लिखा गया पाठ है। इस पाठ के पात्रों के बारे में, उनके रंग-रूप व उनकी उपयोगिता के बारे में चर्चा करें। यह बताने की चेष्टा करें कि संसार में सभी वस्तुएँ उपयोगी हैं और उनका अपना-अपना महत्व है। आपस में मिल-जुलकर रहने की प्रेरणा भी दें।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 10** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्‌देश्य हिंदी भाषा के व्याकरण-पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - उलटे अर्थ वाले शब्दों से बालक अब तक परिचित हो चुके हैं। कुछ अन्य उदाहरण देकर अतिरिक्त अभ्यास करवाए जा सकते हैं।

    ध्यान दें कि बच्चे **ब/व, इ की मात्रा/ई की मात्रा, ए की मात्रा/ऐ की मात्रा, श/ष/स, अ/आ,** आदि से संबंधित गलतियाँ करते हैं। इसलिए बच्चों का ध्यान इस ओर अवश्य दिलाएँ।

- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - हीरा और कोयला एक ही खान में पाए जाते हैं। इसके बारे में जानकारी दें। कोयले की उपयोगिता के बारे में चर्चा करें।